International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-1 Jan-Feb-2023
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

समावेशी (विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्र) शिक्षा में मानसिक संबंधी समस्याओं पर शिक्षकों का दृष्टिकोण का संक्षिप्त विश्लेषण

Arvind Kumar Rajput, Research Scholar, Dept of Education, Sikkim Professional University

Dr Sangita Gupta , Associate Professor, Dept of Education, Sikkim Professional University

सार–

समावेशी शिक्षा सामान्य शिक्षा के छात्रों के साथ–साथ विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्रों को शिक्षित करने का एक दृष्टिकोण है। इस मॉडल के तहत, विशेष जरूरतमंद छात्र ज्यादातर समय गैर–विकलांग छात्रों के साथ बिताते हैं। इन प्रथाओं का अनुप्रयोग भिन्न होता है। स्कूल आमतौर पर हल्के से गंभीर विशेष जरूरतमंद बच्चों वाले छात्रों का चयन करते हैं। समावेशी शिक्षा एकीकरण और मुख्यधारा की पूर्व धारणाओं से भिन्न होती है, जो मुख्य रूप से विकलांगता और 'विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं' से संबंधित होती हैं और निहित शिक्षार्थियों को मुख्यधारा द्वारा 'के लिए तैयार' या आवास के योग्य बनने के लिए। इसलिए एक ऐसा वातावरण तैयार करना जो एक समावेशी वातावरण हो जहां सभी बच्चे अपनी शैक्षिक मांगों को पूरा करने और पूरा करने में सक्षम हों, शिक्षकों के लिए अधिक नवीन और चुनौतीपूर्ण है।

प्रस्तावना–

शिक्षा सीखने की प्रक्रिया है, और ज्ञान, कौशल, मूल्यों, विश्वासों और आदतों के अधिग्रहण के लिए भी है। शिक्षक को छात्रों को ज्ञान, योग्यता हासिल करने में मदद करनी होती है। परंपरागत रूप से, शिक्षक को मुख्य रूप से छात्रों को ज्ञान प्रदाता के रूप में माना जाता है। अब, शिक्षकों से छात्रों की सीखने की प्रक्रिया का समर्थन करने और छात्रों की बहु–बुद्धि और आजीवन स्वयं सीखने की क्षमताओं को विकसित करने में एक सूत्रधार के रूप में एक नई प्रमुख भूमिका ग्रहण करने की उम्मीद की जाती है। शिक्षकों को स्वयं भी आजीवन सीखने वाला होना चाहिए और सीखने के नए प्रतिमान के साथ अपने शिक्षण को स्पष्ट करने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें विभिन्न आयु समूहों, विविध जातीयता के, और पूर्व ज्ञान और पृष्ठभूमि की एक विस्तृत श्रृंखला वाले छात्रों के एक नए ब्रांड के साथ व्यवहार करने में अनुकूली और लचीला होना चाहिए। इसके अलावा, शिक्षकों को नई तकनीकों से परिचित होना चाहिए, जो लगातार बढ़ती गति से तेजी से विकसित हो रही हैं।

समावेशी शिक्षा सामान्य शिक्षा के छात्रों के साथ–साथ विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्रों को शिक्षित करने का एक दृष्टिकोण है। इस मॉडल के तहत, विशेष जरूरतमंद छात्र ज्यादातर समय गैर–विकलांग छात्रों के साथ बिताते हैं। इन प्रथाओं का अनुप्रयोग भिन्न होता है। स्कूल आमतौर पर हल्के से गंभीर विशेष जरूरतमंद बच्चों वाले छात्रों का चयन करते हैं। समावेशी शिक्षा एकीकरण और मुख्यधारा की पूर्व

धारणाओं से भिन्न होती है, जो मुख्य रूप से विकलांगता और 'विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं' से संबंधित होती हैं और निहित शिक्षार्थियों को मुख्यधारा द्वारा 'के लिए तैयार' या आवास के योग्य बनने के लिए। इसलिए एक ऐसा वातावरण तैयार करना जो एक समावेशी वातावरण हो जहां सभी बच्चे अपनी शैक्षिक मांगों को पूरा करने और पूरा करने में सक्षम हों, शिक्षकों के लिए अधिक नवीन और चुनौतीपूर्ण है।

समावेशी शिक्षा के सिद्धांत को "विशेष आवश्यकता शिक्षा पर विश्व सम्मेलनः पहुंच और गुणवत्ता" (सलमांका स्टेटमेंट, स्पेन 1994) में अपनाया गया था और विश्व शिक्षा मंच (डकार, सेनेगल 2000) में इसे बहाल किया गया था। यह वक्तव्य सरकारों से शिक्षा प्रणालियों को समावेशी बनाने को सर्वोच्च प्राथमिकता देने और समावेशी शिक्षा के सिद्धांत को नीति के रूप में अपनाने का आग्रह करता है। समावेशन का विचार भी संयुक्त राष्ट्र के मानक नियमों द्वारा समर्थित है जो विकलांग व्यक्तियों के लिए अवसरों के समानीकरण पर सभी के लिए भागीदारी और समानता की घोषणा करता है। इस प्रकार, समावेशी शिक्षा को सभी शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को संबोधित करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें बाधाओं को कम करके और सीखने के माहौल में शामिल किया गया है। इसका अर्थ है व्यक्तिगत रूप से तैयार किए गए समर्थन के साथ बच्चे के स्थानीय स्कूल की आयु उपयुक्त कक्षा में भाग लेना (यूनिसेफ, 2007)। समावेशी शिक्षा सभी शिक्षार्थियों तक पहुंचने के लिए शिक्षा प्रणाली की क्षमता को मजबूत करने की एक प्रक्रिया है। 'सभी के लिए शिक्षा' के लक्ष्यों ने निर्धारित किया है और घोषणा की है कि प्रत्येक व्यक्ति शैक्षिक अवसरों से लाभ उठाने में सक्षम होगा और उनकी बुनियादी सीखने की जरूरतों को भी पूरा करेगा। इसलिए, समावेश एक शैक्षिक दृष्टिकोण और दर्शन है जो सामाजिक, मनोरंजक, कला, खेल, संगीत, डे केयर और स्कूल के बाद की देखभाल, पाठ्येतर, विश्वास आधारित, और शैक्षणिक और सामाजिक के लिए अन्य सभी गतिविधियों की पूरी श्रृंखला में भाग लेने के अवसर प्रदान करता है। उपलब्धि। इसमें भारत में अवसर शामिल हैं,

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने यूनिसेफ के साथ हाथ मिलाया और विकलांग बच्चों के लिए परियोजना एकीकृत शिक्षा (पीआईईडी) नाम से एक परियोजना शुरू की, जिसका उद्देश्य विकलांग शिक्षार्थियों को नियमित स्कूलों में एकीकृत करना है। हाल के वर्षों में, समावेशी शिक्षा की अवधारणा को न केवल विकलांग छात्रों के लिए, बल्कि सभी वंचित छात्रों को भी शामिल करने के लिए व्यापक किया गया है। पाठ्यक्रम की इस व्यापक समझ ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (छब्थ्–2005) विकसित करने का मार्ग प्रशस्त किया है जो एक कार्यक्रम के माध्यम से सभी बच्चों को स्कूल में शामिल करने और बनाए रखने के महत्व को दोहराता है जो प्रत्येक बच्चे के मूल्य की पुष्टि करता है और सभी बच्चों को गरिमा का अनुभव करने में सक्षम बनाता है। सीखने का आत्मविश्वास।

समावेशी शिक्षा एक ही छत के भीतर विकलांग बच्चों और सीखने की कठिनाइयों के साथ सामान्य बच्चों को शिक्षित करने की दिशा में एक दृष्टिकोण है। यह उन सभी बच्चों की सीखने की जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करता है, जो हाशिए पर और बहिष्करण की चपेट में हैं। यह दर्शाता है कि, सामान्य प्री–स्कूल प्रावधानों, स्कूलों और समर्थन सेवाओं के उपयुक्त नेटवर्क के साथ सामुदायिक शैक्षिक सेटिंग तक पहुंच के माध्यम से, विकलांग या बिना विकलांग सभी छात्र एक साथ सीखने में सक्षम हैं। यह तभी

संभव है जब शिक्षा प्रणाली लचीली हो और विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को आत्मसात करती हो और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्वयं को ढालती हो। इस प्रकार, समावेशी शिक्षा विकलांग व्यक्तियों के लिए सभी शैक्षिक, रोजगार, उपभोक्ता, मनोरंजन, सामुदायिक और घरेलू गतिविधियों में पूरी तरह से भाग लेने के अवसर को संदर्भित करती है जो हर समाज को विशिष्ट बनाती है। यूनेस्को सलामांका स्टेटमेंट (1994) के अनुसार समावेशी शिक्षा यह बता रही है कि समावेशी अभिविन्यास वाले नियमित स्कूल भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण का मुकाबला करने, स्वागत करने वाले समुदायों का निर्माण करने, एक समावेशी समाज का निर्माण करने और 'सभी के लिए शिक्षा' (यूनेस्को, 1997) प्राप्त करने का सबसे प्रभावी साधन हैं। इस प्रकार, 'समावेशी शिक्षा' शब्द का प्रयोग या तो विकलांग बच्चों को नियमित स्कूलों में रखने के लिए किया जाता है या ऐसे छात्रों के स्कूलों से अलगाव को समाप्त करने के लिए किया जाता है, लेकिन वास्तविक प्रथाओं में समावेश विकलांग बच्चों की मुख्यधारा तक सीमित नहीं है, यह प्रावधान के बारे में है सभी बच्चों की विभिन्न सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए स्कूल के माहौल को और अधिक लचीला बनाने के लिए सभी के लिए गहन समर्थन और मौजूदा नीतियों, प्रथाओं और समाज के दृष्टिकोण में बदलाव लाना।

दूसरी ओर, समावेशी शिक्षा का उद्देश्य सभी बच्चों की सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए स्कूलों का पुनर्गठन करना है (आइंस्को, 1998)। इस प्रकार एकीकरण असाधारण बच्चों के लिए नियमित स्कूल में अलग व्यवस्था की मांग करता है, मुख्य रूप से पारंपरिक रूप से विकलांग के रूप में लेबल किए जाने वाले बच्चों के लिए, वापसी, उपचारात्मक शिक्षा और/या मुख्यधारा के रूप में ऐसी प्रथाओं के माध्यम से। हालाँकि, समावेशी स्कूली शिक्षा, पहली बार में, यह मानती है कि विशेष सीखने की ज़रूरतें सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, भाषाई, सांस्कृतिक और साथ ही शारीरिक (या विकलांगता) कारकों से उत्पन्न हो सकती हैं, इसलिए 'विशेष आवश्यकता वाले बच्चों' शब्द का उपयोग किया जाता है। 'विकलांग बच्चों' की तुलना में दूसरा, यह मानता है कि किसी भी बच्चे को स्कूली जीवन के दौरान किसी भी समय सीखने, अल्पकालिक या दीर्घकालिक सीखने में परेशानी हो सकती है और इसलिए, स्कूल को अपने सभी शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए लगातार समीक्षा करनी चाहिए।

भारत में समावेशी शिक्षा की आवश्यकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में 'सभी स्तरों पर विकलांगों को समान भागीदार के रूप में सामान्य समुदाय के साथ एकीकृत करने, उन्हें सामान्य विकास के लिए तैयार करने और उन्हें साहस और आत्मविश्वास के साथ जीवन का सामना करने में सक्षम बनाने' पर जोर दिया गया। 1990 में सभी के लिए शिक्षा पर विश्व घोषणापत्र को अपनाया गया, जिसने देश में पहले से ही स्थापित विभिन्न प्रक्रियाओं को और बढ़ावा दिया। भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम 1992 ने विकलांग छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पेशेवरों के विकास के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया।

सलामांका स्टेटमेंट एंड फ्रेमवर्क फॉर एक्शन ऑन स्पेशल नीड्स एजुकेशन (1994) जून 1994 में 92 सरकारों और 25 अंतरराष्ट्रीय संगठनों का प्रतिनिधित्व करने वाले 300 से अधिक प्रतिभागियों द्वारा आयोजित विचार–विमर्श के परिणामस्वरूप उभरा। सभी के लिए शिक्षा के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए, इसने

समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक मूलभूत नीति–परिवर्तनों पर विचार किया। यह इस बात पर जोर देता है कि स्कूलों को सभी बच्चों को उनकी शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, भाषाई या अन्य स्थितियों की परवाह किए बिना समायोजित करना चाहिए। बयान में पुष्टि की गई है कि विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले लोगों की नियमित स्कूलों तक पहुंच होनी चाहिए जो उन्हें इन जरूरतों को पूरा करने में सक्षम बाल केंद्रित शिक्षाशास्त्र के भीतर समायोजित करना चाहिए। भारत सलामांका वक्तव्य का एक हस्ताक्षरकर्ता था। इस परिप्रेक्ष्य में भारत के मानव संसाधन विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने 21 मार्च 2005 को राज्य सभा में आश्वासन दिया कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने विकलांग बच्चों और युवाओं की समावेशी शिक्षा के लिए एक व्यापक कार्य योजना तैयार की है। इस प्रकार, समावेशी शिक्षा स्कूलों, कक्षाओं और सीखने के लिए छात्रों की सक्रिय भागीदारी के लिए पाठों को डिजाइन करने के नए तरीकों को देख रही है। समावेशन भी स्कूल के माहौल के निर्माण के लिए शिक्षण तकनीकों के विभिन्न तरीकों की खोज कर रहा है जो कक्षा की गतिविधियों में छात्रों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ाता है। ये बच्चों को सभी बच्चों के बीच और स्कूलों मं बच्चों और शिक्षकों के बीच दोस्ती, रिश्ते और आपसी सम्मान विकसित करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

अतः समावेशी शिक्षा का अर्थ है कि नियमित कक्षाओं में पढ़ने वाले सभी बच्चों को शिक्षित किया जाए। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि अलग–अलग बच्चे विशिष्ट कारणों से कक्षा नहीं छोड़ सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक बच्चे को किसी विशेष विषय में आमने–सामने सहायता की आवश्यकता हो सकती है। यह नियमित कक्षा के समय में हो भी सकता है और नहीं भी। एक बार जब स्कूल समावेशी हो जाते हैं, तो इस बात पर गंभीरता से विचार किया जाता है कि कोई बच्चा कितनी बार नियमित कक्षा से बाहर हो सकता है और ऐसा क्यों हो सकता है इसका मतलब यह नहीं है कि कुछ विशेषताओं वाले बच्चों (उदाहरण के लिए, विकलांग लोग) को एक साथ समूह में रखा जाता है। पूरे या स्कूल के दिन के हिस्से के लिए अलग–अलग कक्षाएँ।

भारत सरकार पीडब्ल्यूडी अधिनियम, 1995 के अनुसार विकलांग बच्चों के लिए मुख्यधारा के स्कूलों के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है और देश के सभी स्कूलों को 2012 तक विकलांगों के अनुकूल बनाया जाएगा (संजीव और कुमार, 2007)। विकलांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति, 2006, जो उस ढांचे को स्पष्ट करने का प्रयास करती है जिसके तहत राज्य, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र को विकलांग व्यक्तियों के लिए एक सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करने और उनके देखभाल करने वालों के लिए समर्थन सुनिश्चित करने के लिए काम करना चाहिए। सबसे हालिया प्रगति बच्चों के मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (2009) है जो छह से चौदह वर्ष की आयु के सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा के अधिकार की गारंटी देता है (एमएचआरडी, 2012)। प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण (यूईई) के लिए भारत सरकार की वर्तमान प्रतिबद्धता शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग बच्चों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं की देखभाल किए बिना पूरी तरह से प्राप्त नहीं की जा सकती है।

समावेशी शिक्षा एक ही छत और एक ही कक्षा में सामान्य बच्चों की तुलना में विकलांग बच्चों और सीखने की कठिनाइयों वाले बच्चों को शिक्षित करने का एक नया दृष्टिकोण है। यह किसी भी क्षेत्र में उनकी

ताकत या कमजोरियों की परवाह किए बिना सभी छात्रों को एक कक्षा और समुदाय में एक साथ लाता है, और सभी छात्रों की क्षमता को अधिकतम करने का प्रयास करता है। इसलिए, मुख्यधारा की शिक्षा एक समावेशी और सहिष्णु समाज को बढ़ावा देने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है।

समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों के रवैये का पैमाना

जब विशेष शैक्षिक आवश्यकता वाले बच्चों को मुख्यधारा की कक्षाओं में रखा जाता है, तो सफलता के लिए सकारात्मक शिक्षक दृष्टिकोण आवश्यक है। वर्तमान अध्ययन में समावेशन शिक्षा के प्रति शिक्षकों के दृ ष्टिकोण और समावेशन शिक्षा के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण पैमाने का उपयोग करके समावेश के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का सर्वेक्षण किया गया। व्यक्तिगत सर्वेक्षण में कुल 480 शिक्षकों ने भाग लिया और एक संरचित शोध उपकरण के माध्यम से अपनी राय एकत्र की।

तालिका–1 समावेशी शिक्षा में मनोवैज्ञानिक/व्यवहार संबंधी समस्याओं पर शिक्षकों का दृष्टिकोण

क्रमांक	बयान	इस बात से सहमत	दुविधा में पड़ा हुआ	असहमत	कुल
	अनुकूल				
1	समावेशी शिक्षा विशेष बच्चों में अधिक आत्मविश्वास विकसित करने में सहायक है	267 (55.6)	122 (25.4)	91 (18.9)	**480 (100.0)**
2	समावेशी शिक्षा से ही संभव है कि विशेष बालकों की योग्यताओं का विकास एवं विकास अधिक से अधिक किया जा सके	257 (53.6)	180 (37.6)	43 (8.9)	**480 (100.0)**
3	समावेशी शिक्षा से सामान्य बच्चों में हीन भावना का विकास नहीं होता है	201 (42.0)	158 (32.8)	121 (25.1)	**480 (100.0)**
4	समावेशी शिक्षा से विशेष बच्चों में सकारात्मक सामाजिक अभिवृत्ति का विकास होता है	285 (59.5)	101 (21.0)	94 (19.5)	**480 (100.0)**
5	समावेशी शिक्षा का विशेष बच्चों के शैक्षिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है	264 (55.0)	131 (27.2)	85 (17.8)	**480 (100.0)**
	प्रतिकूल				
6	समावेशी शिक्षा विशेष बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक नहीं	141 (29.3)	151 (31.7)	188 (39.1)	**480 (100.0)**
7	समावेशी शिक्षा के कारण सामान्य बच्चों के शैक्षिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है	118 (24.6)	152 (31.7)	210 (43.8)	**480 (100.0)**
8	समावेशी शिक्षा में, सामान्य छात्रों को भावनात्मक रूप से उपेक्षित किया जाता है	132 (27.5)	163 (34.0)	185 (38.5)	**480 (100.0)**

9	समावेशी शिक्षा के कारण सामान्य बच्चों की सीखने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है	105 (21.9)	192 (39.9)	183 (38.2)	**480 (100.0)**
10	समावेशी शिक्षा, विशेष बच्चों पर सामान्य बच्चों के समान प्रदर्शन दिखाने के लिए अतिरिक्त दबाव डालती है	122 (25.3)	144 (29.9)	214 (44.4)	**480 (100.0)**

शिक्षक की आगे की समावेशी शिक्षा का मनोवैज्ञानिक/व्यवहारिक रवैया तालिका–1 में प्रस्तुत किया गया है। डेटा से पता चलता है कि 55.6 प्रतिशत शिक्षक इस बात से सहमत हैं कि समावेशी शिक्षा विशेष बच्चों में अधिक आत्मविश्वास विकसित करने में सहायक है। शिक्षकों के रवैये से यह भी पता चलता है कि 53. 6 उपस्थित लोगों ने महसूस किया कि समावेशी शिक्षा के माध्यम से विशेष बच्चों में अधिकतम खेती और क्षमताओं के विकास की संभावना है। समावेशी शिक्षा में सामान्य बच्चों के साथ विशेष बच्चों का मेल होता है। इस संबंध में 42.0 प्रतिशत शिक्षकों का मत था कि समावेशी शिक्षा से सामान्य बच्चों में हीन भावना विकसित नहीं होती है जबकि वे विशेष बच्चों के साथ पढ़ाते हैं। इस प्रकार, 59.5 प्रतिशत शिक्षकों ने महसूस किया कि समावेशी शिक्षा से विशेष बच्चों में सकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण विकसित होता है, 55.0 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि समावेशी शिक्षा का विशेष बच्चों के शैक्षिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इसके विपरीत समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों का मनोवैज्ञानिक/व्यवहारिक रवैया यह दर्शाता है कि समावेशी शिक्षा के लिए 39.1 प्रतिशत असहमत विशेष बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक नहीं है। समावेशी शिक्षा के कारण सामान्य बच्चों के शैक्षिक विकास पर विविध प्रभाव के संबंध में, 43.8 पूर्व शिक्षक इस बात से असहमत थे कि समावेशी शिक्षा में सामान्य छात्रों की भावनात्मक रूप से उपेक्षा की जाती है, और 38.2 प्रतिशत इस बात से असहमत हैं कि सामान्य बच्चों की सीखने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। समावेशी शिक्षा के लिए। इसलिए 44.4 प्रतिशत शिक्षकों ने समावेशी शिक्षा के प्रति इन नकारात्मक विकल्पों को व्यक्त किया, विशेष बच्चों पर सामान्य बच्चों के समान प्रदर्शन दिखाने के लिए एक अतिरिक्त दबाव डाला।

तालिका–2 समावेशी शिक्षा की मनोवैज्ञानिक/व्यवहार संबंधी समस्याओं पर शिक्षकों का रैंक क्रम रवैया

क्रमांक	**बयान**	**इस बात से सहमत**	**दुविधा में पड़ा हुआ**	**असहमत**	**कुल**
	अनुकूल				
	स्केल वैल्यू (एसवी)	**3**	**2**	**1**	
1	समावेशी शिक्षा विशेष बच्चों में अधिक आत्मविश्वास विकसित करने में सहायक है	290	106	84	**480**

2	समावेशी शिक्षा से ही संभव है कि विशेष बालकों की योग्यताओं का विकास एवं विकास अधिक से अधिक किया जा सके	280	130	70	**480**
3	समावेशी शिक्षा से सामान्य बच्चों में हीन भावना का विकास नहीं होता है	240	135	105	**480**
4	समावेशी शिक्षा से विशेष बच्चों में सकारात्मक सामाजिक अभिवृत्ति का विकास होता है	300	100	80	**480**
5	समावेशी शिक्षा का विशेष बच्चों के शैक्षिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है	290	120	70	**480**
		प्रतिकूल			
6	समावेशी शिक्षा विशेष बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक नहीं	200	150	130	**480**
7	समावेशी शिक्षा के कारण सामान्य बच्चों के शैक्षिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है	183	207	90	**480**
8	समावेशी शिक्षा में, सामान्य छात्रों को भावनात्मक रूप से उपेक्षित किया जाता है	115	150	215	**480**
9	समावेशी शिक्षा के कारण सामान्य बच्चों की सीखने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है	100	175	205	**480**
10	समावेशी शिक्षा, विशेष बच्चों पर सामान्य बच्चों के समान प्रदर्शन दिखाने के लिए अतिरिक्त दबाव डालती है	100	130	250	**480**
	कर्मचारी के प्रदर्शन पर कर्मचारी कल्याण उपायों के कार्य वातावरण के स्कोर का प्रतिशत	सामान्य काम करने की स्थिति के प्रदर्शन के लिए कुल स्कोर/अधिकतम संभावित स्कोर X 100			**45.0**

समावेशी शिक्षा में मनोवैज्ञानिक/व्यवहार संबंधी समस्याओं के प्रति शिक्षक के रवैये का रैंकिंग क्रम अवधारणात्मक स्कोर विश्लेषण तालिका–2 में प्रस्तुत किया गया है। यह देखा गया है कि पहली रैंक इस कथन को दी गई है कि 'समावेशी शिक्षा के माध्यम से यह संभव है कि विशेष बच्चों की क्षमताओं की खेती और विकास को अधिकतम किया जा सके' जिसने स्केल वैल्यू 827 हासिल की, उसके बाद स्केल के साथ दूसरा रैंक हासिल किया। मूल्य 811 'समावेशी शिक्षा के कारण विशेष बच्चों में सकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण विकसित होता है'। तीसरी और चौथी रैंक क्रमशः 802 और 800 के पैमाने के साथ 'विशेष बच्चों के शैक्षिक विकास पर समावेशी शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव' और 'समावेशी शिक्षा विशेष बच्चों में अधिक आत्मविश्वास विकसित करने में सहायक है' कथनों को दी गई है। पांचवीं रैंक 'समावेशी शिक्षा के कारण सामान्य बच्चों के शैक्षिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है' स्केल वैल्यू 741 के साथ दिया गया है। इस क्रम में छठी और सातवीं रैंक 'समावेशी शिक्षा, निर्धारित करती है' बयानों को दी जाती है। सामान्य बच्चों के समान प्रदर्शन दिखाने के लिए विशेष बच्चों पर अतिरिक्त दबाव' और 'समावेशी शिक्षा सामान्य बच्चों में हीन भावना का विकास नहीं करती है', जिसका पैमाना क्रमशः 739 और 733 है। आठवीं और नौवीं रैंक क्रमशः 731 और 713 के पैमाने के साथ 'समावेशी शिक्षा के कारण सामान्य बच्चों की सीखने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है' और 'समावेशी शिक्षा में, सामान्य छात्रों को भावनात्मक रूप से उपेक्षित' कथनों को दिया जाता है। अंत में दसवीं रैंक ने क्रमशः 709 के पैमाने के साथ 'समावेशी शिक्षा विशेष बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक नहीं है' कथन द्वारा प्राप्त की। अतः उपरोक्त विश्लेषण से यह देखा गया है कि समावेशी शिक्षा की मनोवैज्ञानिक/व्यवहार संबंधी समस्याओं के चार कथन औसत अंक मूल्य से अधिक माने गए हैं और शेष छह कथन औसत अंक मूल्य से कम पाए गए हैं और उन्हें अधिक सकारात्मक द्वारा अलग किया गया है। और कम सकारात्मक बयान और निम्नलिखित में प्रस्तुत किया गया।

उपरोक्त विश्लेषण से पता चलता है कि शिक्षकों के बहुसंख्यक समूह का मत है कि समावेशी शिक्षा के माध्यम से यह संभव है कि विशेष बच्चों की क्षमताओं का विकास और विकास अधिकतम किया जा सके। इससे विशेष बच्चों में सकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण का विकास होगा। इससे विशेष बच्चों के शैक्षिक विकास पर समावेशी शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए समावेशी शिक्षा विशेष बच्चों में अधिक आत्मविश्वास विकसित करने में सहायक होती है।

निष्कर्ष–

वर्तमान के समावेशी दृष्टिकोण में मुख्य धारा में विकलांग व्यक्तियों की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए जुड़वां ट्रैक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। इस प्रकार, कक्षा प्रबंधन के दृष्टिकोण में मूलभूत परिवर्तन होने पर समावेश सबसे अच्छा काम करता है। शिक्षा में समावेश इस तथ्य को स्वीकार करता है कि प्रत्येक बच्चा एक तरह से दूसरे पर विशेष है। इस तरह के दृष्टिकोण वाले शिक्षक को पता चलता है कि प्रत्येक बच्चे में अलग–अलग स्तर पर सीखने की क्षमता होती है। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (एनकेसी) का कहना है कि शिक्षा प्रणालियों में लैंगिक समानता सुनिश्चित की जानी चाहिए। विकलांगता के बारे में उत्तेजना अभ्यास मजेदार हो सकता है लेकिन उनका गहरा शैक्षिक मूल्य है।

विकलांगता की स्थिति को प्रोत्साहित करने के लिए, सामान्य कक्षाओं में गैर–विकलांग बच्चों को कुछ समय के लिए अंधा कर दिया जा सकता है, उनके कान कुछ समय के लिए बंद हो जाते हैं और उन्हें एक पैर का उपयोग करके चलने, अंगूठे की मदद के बिना लिखने आदि के लिए भी कहा जा सकता है। संशोधन समावेशन सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यचर्या संदर्भ और लेन–देन संबंधी रणनीतियों का। सहकारी अधिगम उपागम को एक प्रभावी शिक्षण माना जाता है। कक्षा में सीखने की प्रक्रिया खासकर जब कक्षा में विभिन्न क्षमताओं के बच्चे हों।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- बाला रेणु (2014) ने "हरियाणा में प्राथमिक स्कूल स्तर पर समावेशी शिक्षा के लिए प्रशासनिक, शारीरिक और व्यवहार संबंधी बाधाओं का एक अध्ययन" पर अपनी थीसिस में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय को थीसिस प्रस्तुत की,
- बंसल सोनम (2012), 'समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के दृष्टिकोण का एक अध्ययन'। शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। खंड 1. पीपी. 55–63
- बेस्ट डब्ल्यू. जॉन एंड खान वी. जेम्स (2012), "रिसर्च इन एजुकेशन" प्रेंटिस–हॉल ऑफ इंडिया प्रा। लिमिटेड, नई दिल्ली–110001, छठा संस्करण, पेज नं। 38.
- बिस्वास, पी.सी. और पांडा, ए. (2011)। समावेशी शिक्षा के लिए मनोवृत्ति बाधाओं पर एक अध्ययन। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एक्सटेंशन, 1(41), 30–40.
- ब्रैडशॉ, लोरी।, और मुंडिया, लॉरेंस। (2012)। समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण और चिंता: ब्रुनेई इन–सर्विस और प्रीसर्विस टीचर्स। विशेष शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। वॉल्यूम। 121(1).पीपी 35–40।
- फ़ज़ैला एहसान, मुहम्मद सिकंदर गयास खान, सकीना गुलज़ार (2015), "विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षकों और चिंताओं के दृष्टिकोण की तुलना", विशेष बच्चों के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण, ।श्र।ै वॉल्यूम। 03 अंक 01 जनवरी–मार्च 2015।